चुनावी छाया से डरी पार्टियां ■ फरहा ने किया नंगाः शाहरुख

22 अक्टूबर 2007

आउटलुक

साप्ताहिक

मूल्य 15 रुपये

नवरात्र पर मां दुर्गा के भव्य चित्र

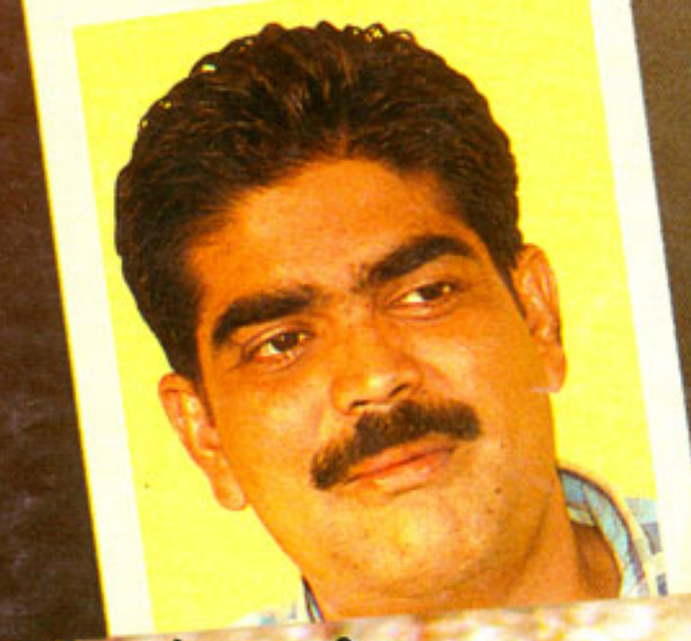

मो. शहाबुद्दीन

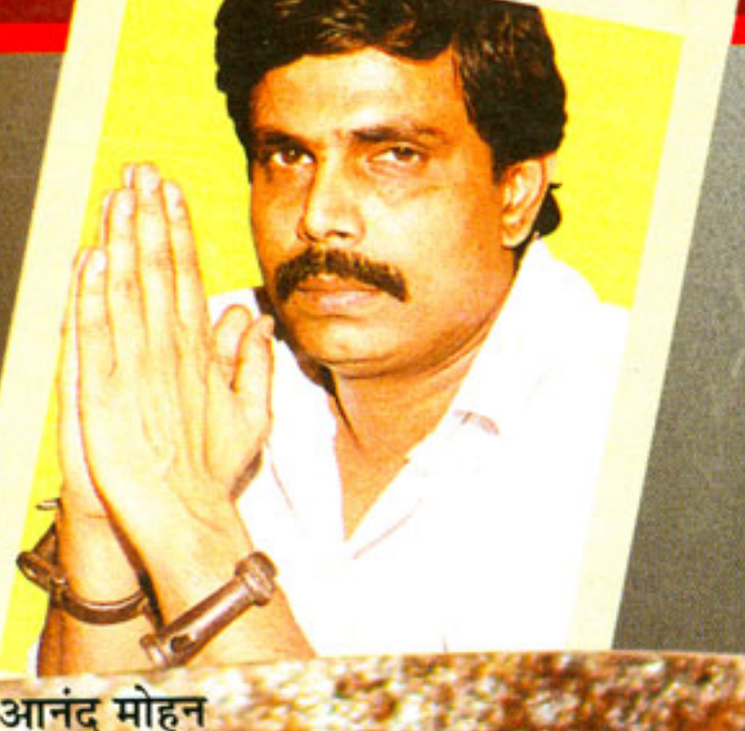

आनंद मोहन

सत्ता से जुड़े अपराधियों को अब मिलने लगा कठोर दंड

नप गए बाहुबली

मुख्तार अंसारी

पप्पू यादव

आदिवासी बच्चों की मुक्ति का संदेश

सबसे बड़े आदिवासी स्कूल की रग्बी टीम ने लंदन में बनाई विश्व कप की हैटट्रिक

देश के बहुत कम लोगों को पता चला होगा कि *चक दे इंडिया* की रौ में विश्व कप की हैटट्रिक हो गई है। ट्वेंटी20 क्रिकेट और शतरंज के विश्व कप की तरह तीसरा विश्व कप इसलिए सुर्खियों में नहीं आया क्योंकि इसे भुवनेश्वर स्थित आदिवासी बच्चों के देश के सबसे बड़े स्कूल कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस (किस) की रग्बी टीम ने जीता। किस की अंडर 14 रग्बी टीम ने पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हुए तीन अक्टूबर को लंदन के स्कॉटिस रग्बी क्लब में दक्षिण अफ्रीका की टीम को हराकर जब रग्बी विश्व कप पर कब्जा जमाया तो अब तक भूख से मौत को लेकर चर्चित उड़ीसा के आदिवासी इलाकों को मानो मुक्ति की ट्रॉफी मिल गई। इस टीम ने जांबिया, केन्या, स्विट्जरलैंड और रोमानिया को शिकस्त देकर फाइनल में प्रवेश किया था। कप्तान विकास चंद्र मुर्मू और टीम के सदस्य चित्तरंजन मुर्मू, बबुला मलका, राजकिशोर मुर्मू, बुकाई हंसदा, निरंजन विस्वाल, हादी धंगदा माझी, सहदेव माझी, गौरंग जमुदा, नरसिंह केराई, बेरियल बेसरा और गणेश हेंब्रम अपने स्कूल के साथियों के लिए विजय का वह संदेश लेकर आए जो आने वाले समय में गरीबी की चक्की में पिस रहे उड़ीसा के आदिवासी इलाकों की तकदीर बदल देगा।

भुवनेश्वर स्थित इस स्कूल के तमाम पांच हजार आदिवासी लड़के-लड़कियों को जीवन में कुछ कर दिखाने की ऐसी ही लगन लगी हुई है। उड़ीसा में 23.13 प्रतिशत आदिवासी हैं। उनके बच्चों के लिए पढ़ने की सुविधा की बात तो दूर, दो जून की रोटी तक नहीं मिलती है। किस में इन्हीं इलाकों के गरीब बच्चे अपनी मुक्ति की राह तैयार कर रहे हैं । उड़ीसा के आदिवासी इलाके अक्सर भूख से हुई मौतों के लिए सुर्खियों में रहते हैं लेकिन अब ऐसा नहीं है। किस स्कूल में पढ़ने वाले पांच हजार लड़के-लड़कियों की आंखों में डॉक्टर, एमबीए, इंजीनियर, बड़ा खिलाड़ी, वैज्ञानिक और न जाने क्या-क्या बनने के सपने तैर रहे हैं। इनमें से कोई उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की तैयारी में है तो कोई नोबेल प्राइज विजेता से हाथ मिलाने के बाद वैज्ञानिक बनने की धुन से लबरेज है।

देश का सबसे बड़ा आदिवासी स्कूल होने की वजह से इसका नाम *लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड्स* में दर्ज है। कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (किट) डीम्ड यूनिवर्सिटी ने इस स्कूल की स्थापना की है। कॉर्पोरेट जगत के लोग इसे अनोखी मिशाल मानता है। स्कूल के हर लड़के-लड़की में कुछ कर दिखाने का ऐसा जज्बा है कि पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, शबाना आजमी, नोबेल प्राइज विजेता रिचर्ड अर्नेस्ट समेत कई हस्तियां प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाईं। सविता हंसदा और निवेदिता अमेरिका में पढ़ने के सपने संजोए बैठी हैं। किट ने हाल ही में पेनसिलवेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी के साथ उनकी उच्च शिक्षा के लिए सहमति पत्र पर दस्तखत किया है। अमेरिकी यूनिवर्सिटी के चांसलर जोएल एस. रोडनी स्कूल में आकर बच्चों की लगन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। इस अमेरिकी विश्वविद्यालय ने हर साल किस के 15 बच्चों को उच्च शिक्षा देने की जिम्मेवारी ली है। नोबेल पुरस्कार विजेता रिचर्ड अर्नेस्ट भी इस स्कूल का दौरा कर चुके हैं।

अभ्यास करती किस की रग्बी टीम (ऊपर) और किट के चांसलर डॉ. अच्युत सामंत

दोनों फोटो: शैलेश

किट के 42 वर्षीय चांसलर डॉ. अच्युत सामंत ने बताया कि किस केजी टु पीजी संस्थान के रूप में स्थापित किया गया है। इसे दुनिया का पहला ट्राइबल यूनिवर्सिटी बनाने की हमारी योजना है ताकि उड़ीसा के सभी आदिवासी बच्चे अपने सपनों को पूरा कर सकें। उन्होंने कहा कि इस स्कूल से हायर सेकेंडरी करने वाले प्रतिभाशाली छात्रों के लिए किट के सभी अत्याधुनिक इंजीनियिरंग, मेडिकल और बिजनेस स्कूल में उच्च सीटें रिजर्व हैं। डॉ. सामंत ने उड़ीसा के आदिवासी इलाकों को भूख और अशिक्षा से मुक्त करने का बीड़ा उठाया है।

आठ सौ करोड़ रुपये की लागत से बने किट डीम्ड यूनिवर्सिटी कैंपस की स्थापना करने वाले देश के सबसे कम उम्र के चांसलर डॉ. सामंत अपनी सादगी और समाज सेवा की वजह से उड़ीसा में 'कॉर्पोरेट संत' के रूप में चर्चित हो गए हैं। किस नामक देश का सबसे बड़ा आदिवासी स्कूल उनकी संत प्रवृत्ति का जीता जागता उदाहरण है। उनके सिर पर आधुनिक यूनिवर्सिटी स्थापित करने की धुन सवार थी ताकि समाज के वंचित तबके के छात्रों को पढ़ाई की सुविधा मुहैया हो सके। धुन की वजह से वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल रहे लेकिन इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी स्थापित करने के बाद भी उनकी सादगी वैसी की वैसी है।

डॉ. सामंत ने भुवनेश्वर से 48 किलोमीटर दूर अपने गांव कलाराबैंक को तमाम सुविधाओं से लैस कर ऐसा मॉडल गांव बना दिया है कि पास के छोटे शहर भी उसके सामने कुछ नहीं। उनके गांव में आवासीय हाईस्कूल, आवासीय कॉलेज, 10 बेड का प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, स्ट्रीट लाइट, पक्की सड़कों के अलावा विलेज नॉलेज सेंटर, तालाब और बहुत कुछ हैं। उन्होंने बगल के गांवों के उद्धार का बीड़ा भी उठा लिया है।●

भुवनेश्वर से लौटकर शैलेश कुमार झा